NEW EDUCATION POLICY (NEP) 2022

UNIVERSITY DEPARTMET OF PANCHPARGANIA

HONOURS PROGRAMME

SUBJECT CODE = 27

FOR UNDER GRADUATE COURSES UNDER RANCHI UNIVERSITY

Implemented from

Academic Session 2022-2025

NEW EDUCATION POLICY (NEP) 2022 Under& Graduate
Syllabus as per Guidelines of the Ranchi University, Ranchi

पाठ्यक्रम समिति के सदस्यगण

अध्यक्ष– **श्री तारकेश्वर सिंह मुण्डा**
विभागाध्यक्ष
स्नातकोत्तर पंचपरगनिया विभाग
राँची विश्वविद्यालय, राँची

<u>सदस्यगण</u>

1. **डॉ. नरेन्द्र कुमार दास** 18/11/2022
Dr. NARENDRA KUMAR DAS
Assistant Professor
Univ. Deptt. of Panchpargania
Ranchi University, Ranchi

2. **श्री रमा कांत महतो** 21/11/22

3. **श्री जय प्रकाश उराँव** 21/11/2022

23/11/22
H.O.D.
University Deptt. of Panchpargania
Ranchi University, Ranchi

विभागाध्यक्ष
स्नातकोत्तर पंचपरगनिया विभाग
राँची विश्वविद्यालय, राँची

Submitted for Publication at Ranchi University Website

पंचपरगनिया स्नातक पाठ्यक्रम का अधिगम परिणाम

स्नातक पंचपरगनिया (प्रतिष्ठा) कार्यक्रम से संबद्ध अधिगम परिणाम इस प्रकार है :–

1. साहित्य संप्रेषण के आधार बिंदुओं की जानकारी देना ताकि साहित्य के सम्बन्ध में स्पष्ट समझ विकसित हो सके।
2. पंचपरगनिया साहित्य और भाषा का व्यवस्थित और तर्कसंगत ज्ञान कराना ताकि उसके सैद्धांतिक पक्ष और साहित्यिक विकास के सम्बन्ध में पर्याप्त जानकारी मिल सके।
3. साहित्य की विभिन्न विधाओं को पढ़ने और समझने की योग्यता का विकास करना ।
4. साहित्य लेखन की विविध शैली और समीक्षात्मक दृष्टि का विकास करना
5. स्थानीय, राष्ट्रीय और वैश्विक सांस्कृतिकता के वृहद संजाल के बारे में जानकारी देना ताकि विद्यार्थी में साहित्यिक मूल्यांकन की योग्यता विकसित हो सके।
6. समीच्य दृष्टि और व्यवस्थित वैचारिकी का प्रर्दशन करना जिससे पंचपरगनिया साहित्य के अध्ययन के प्रति जिज्ञासा और प्रश्न उत्पन्न हो सके।
7. आधुनिक संदर्भ में तकनीकी संसाधनों को इस्तेमाल करते हुए पंचपरगनिया साहित्य की जानकारी देना।
8. प्रत्येक स्तर पर जीवन के मूल्यों और साहित्यिक मूल्यों का निर्धारण करने की क्षमता और ज्ञान का विकास करना ।
9. विद्यार्थी में श्रवण, लेखन और वचन के साथ-साथ कल्पनाशक्ति का विकास करना जिससे कि उसके समग्र व्यक्तित्व में निखार आ सके।
10. साहित्य के अध्ययन के बाद रोजगार के विभिन्न क्षेत्रों की पहचान करते हुए रोजगार के नए मार्ग को तलाशना।
11. वर्तमान युग सूचना क्रांति का युग है जिसमें अभिव्यक्ति की प्रधानता है ऐसे में तकनीकी के विकास ने साहित्य संचरण को अत्यंत सुगम बना दिया है इसी के परिपेक्ष्य में पंचपरगनिया साहित्य लेखन और अनुवाद का मंच प्रदान करना जिसका उपयोग कर जनसंचार सं लेकर व्यक्तित्व विकास तक में विद्यार्थी निष्णात हो सके। विद्यार्थी की रूचियों को एक व्यवस्थित रूप देना और उन्हें विभिन्न विधाओं में से चयन की स्वतंत्रता प्रदान करना ताकि वे स्नातक पाठ्यक्रम के पूर्ण होने के बाद खुद ही साहित्य के विभिन्न क्षेत्रों में से अपनी रूचि के अनुसार चयन कर सकें।
12. भारत के साहित्यिक, सांस्कृतिक और भाषाई विविधता को जानने के प्रति जागरूकता पैदा करना।
13. भारतीय साहित्य के वाङमय में पंचपरगनिया भाषा को स्थापित करना ।
14. मातृभाषा, मातृभूमि की सेवा प्रेम को अटूट बनाना ।
15. ग्रामीण एवं शहर के विद्यार्थियों को शैक्षणिक एवं साहित्यिक दृष्टिकोण से मजबुत बनाते हुए राष्ट्रीय एकता की भावना से जोड़ना ।

पंचपरगनिया स्नातक पाठ्यक्रम का उद्देश्य

पंचपरगनिया स्नातक पाठ्यक्रम का उद्देश्य निम्नांकित लक्ष्यों को प्राप्त करना है :

1. पंचपरगनिया साहित्य का अध्ययन प्रस्तुत करना।
2. पंचपरगनिया भाषा, साहित्य और समाज को समझने में लोगों को मदद करना।
3. नई पीढ़ी को पंचपरगनिया साहित्य की ओर प्रेरित करना।
4. पंचपरगनिया साहित्य के रचनाकारों को समाज में प्रतिष्ठित करना और उनके कृतियों को प्रकाश में लाना।
5. पंचपरगनिया साहित्य के महत्व और प्रतिष्ठा में वृद्धि करना।
6. पंचपरगनिया साहित्य का संकलन, संचयन, प्रकाशन और मूल्यांकन को दिशा देना।
7. विद्यार्थियों को कुशल, संवेदनशील और जिम्मेवार नागरिक बनाना।
8. भाषा संबंधी कौशल का विकास करना।
9. उच्चारण, वर्तनी और लिपि का सही ज्ञान कराना।
10. मूलभूत कौशल यथा लेखन, श्रवण और अभिव्यक्ति कला को विकसित करना।
11. एक कुशल वक्ता का निर्माण करना।
12. विभिन्न साहित्यिक विधाओं की जानकारी देना।
13. स्थानीय से लेकर वैश्विक स्तर तक के विभिन्न विशिष्ट साहित्यों से परिचित कराना।
14. समाज और समुदाय के प्रति संवेदनशील दृष्टि का विकास करना।
15. समाज के विभिन्न समुदायों के प्रति सहिष्णुता एवं मैत्रीपूर्ण भावना का विकास करना।
16. मानवीय मूल्यों के प्रति स्वस्थ दृष्टिकोण विकसित करना।
17. साहित्य में राष्ट्र और राष्ट्रवाद के सही अर्थों को बताना।
18. राष्ट्रीय चेतना का विकास करना।
19. भाषिक, साहित्यिक, सांस्कृतिक विरासतों को राष्ट्रीय परिपेक्ष्य में स्थापित करते हुए समानता का अवसर प्राप्त करना ।

I. MEJOR COURSE - MJ- 1:
पंचपरगनिया भाषा साहित्य का प्राचीन इतिहास

पाठ्यक्रम के इस अंश का अधिगम परिणाम निम्नवत् होगाः–

1. विद्यार्थी पंचपरगनिया भाषा का ऐतिहासिक पृष्टभूमि, उद्‌भव, विकास आदि के संदर्भ में ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।
2. पंचपरगनिया भाषा साहित्य के प्रारम्भिक व विकासात्मक स्वरूप से परिचित हो सकेंगे।
3. पंचपरगनिया भाषा के भावगत, भाषागत, शैलीगत आदि विशेषताओं से अवगत हो सकेंगे।

प्रस्तावित संरचना

इकाई I– पंचपरगनिया भाषा का ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, उद्‌भव, विकास, लेखन परम्परा, नामकरण, क्षेत्र–विस्तार, पंचपरगनिया भाषा–भाषी समुदाय एवं जनसंख्या, पंचपरगनिया भाषा के विविध रूप, विशेषताएँ, समस्याएँ एवं सम्भावनाएँ।

इकाई II– पंचपरगनिया पद्य साहित्य का इतिहास–सामान्य परिचय

(क) प्राचीन काल

(ख) मध्यकाल

(ग) आधुनिक काल

इकाई III– पंचपरगनिया गद्य साहित्य का इतिहास – सामान्य परिचय

(क) प्राचीन काल

(ख) मध्यकाल

(ग) आधुनिक काल

संदर्भ ग्रंथें – 1 पंचपरगनिया भाषा, श्री परमानन्द महतो

2 पंचपरगनिया भाषा और साहित्य का इतिहास, डॉ. करमचन्द्र अहीर

I. MEJOR COURSE - MJ- 2:

पंचपरगनिया भाषा का लोक साहित्य

पाठ्यक्रम के इस अंश का अधिगम परिणाम निम्नवत् होगाः–

1. लोक साहित्य किसी भी भाषा का आधार स्तम्भ होता है। इससे विद्यार्थी पंचपरगनिया भाषा के लोक साहित्य के संदर्भ में ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।
2. लोक साहित्य में लोक भावना, लोक ज्ञान और लोक परम्परा रहती है। इससे विद्यार्थी लोक साहित्य एवं उसके स्वरूप, विशेषताओं आदि के बारे में जान सकेंगे।

प्रस्तावित संरचना

इकाई I – लोकगीत – परिभाषा, वर्गीकरण, विशेषताएँ, महत्व।

इकाई II – लोक कथा एवं लोकनाट्य – परिभाषा, वर्गीकरण, विशेषताएँ, महत्व।

इकाई III – प्रकीर्णसाहित्य – लोकोक्ति, मुहावरे, पहेली, मंत्र, खेल गीत– परिभाषा, वर्गीकरण, विशेषताएँ, महत्व।

संदर्भ ग्रंथें – 1 पंचपरगनिया लोकगीतों में जनजीवन, डॉ. अम्बिका स्वाँसी,

2 पंचपरगनिया लोक साहित्य और संस्कृति, परमानंद महतो एवं दीनबंधु महतो

3 पंचपरगनिया लोक साहित्य, डॉ दिनेश प्रसाद सिंह

I. MEJOR COURSE - MJ- 3:

पंचपरगनिया भाषा का व्याकरण

पाठ्यक्रम के इस अंश का अधिगम परिणाम निम्नवत् होगाः–

1. व्याकरण भाषा की कसौटी होती है। इसी से भाषा निखरती है। भाषा के वैज्ञानिक ज्ञान हेतु व्याकरण की आवश्यकता होती है। इससे विद्यार्थी पंचपरगनिया भाषा के व्याकरण से परिचित हो सकेंगे।
2. व्याकरण की परम्परा, दरकार व विशेषताओं के बारे में जान सकेंगे।

प्रस्तावित संरचना

इकाई–I – व्याकरण की परम्परा, व्याकरण का दरकार, विशेषताएँ।

इकाई–II– ध्वनि, वर्ण, संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, वचन, लिंग–परिभाषा एवं भेद।

इकाई–III– कारक, क्रिया, क्रिया विशेषण, वाच्य, अव्यय, काल, कृन्दत, तद्वित, उपसर्ग, प्रत्यय, तत्सम, तद्भव तथा समास–परिभाषा एवं भेद।

संदर्भ ग्रंथें – 1 आदर्श पंचपरगनिया व्याकरण, डॉ करमचन्द्र अहीर

2 पंचपरगनिया भाषा, परमानन्द महतो

I. MEJOR COURSE - MJ- 4:

पंचपरगनिया भाषा का पद्य साहित्य

पाठ्यक्रम के इस अंश का अधिगम परिणाम निम्नवत् होगाः–

1. पंचपरगनिया भाषा के प्राचीन से आधुनिक कवियों के काव्य कृतियों के संदर्भ में ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।
2. पंचपरगनिया के प्राचीन साहित्य के पुरोधाओं के बारे में जान सकेंगे।
3. किसी भी भाषा में परिवर्त्तन अनिवार्य तत्व है। पंचपरगनिया में भी आधुनिकता परिलक्षित होती रही है। इस पत्र के माध्यम से विद्यार्थी आधुनिक पंचपरगनिया कवि व काव्य से परिचित हो सकेंगे।

प्रस्तावित संरचना

कवि का सामान्य परिचय एवं उनके प्रतिनिधि गीत-कविताएँ

इकाई–I– प्राचीन कवि एवं काव्य– बरजुराम तांती, विनन्द सिंह, गौरांग सिंह, रामकृष्ट गांगुली, भवप्रीता नन्द ओझा, दीना तांती, उदय कर्मकार, नरोत्तम सिंह, दुर्योधन दास, अचरत सिंह, रामा, तारा, धूम सिंह, हरि मछुआ, विदुमनी, चैतन सिंह, मंगल दास, खेपा, लेंजवा, मानिक साय, गंगाधर, परेश आदि

इकाई–II–आधुनिक कवि एवं काव्य– डॉ. करमचन्द्र अहीर, डॉ. चन्द्रमोहन महतो, परमानन्द महतो, राजकिशोर सिंह, सृष्टिधर महतो, दुखहरण नायक, शक्तिधर अधिकारी, राजकिशोर साहू, आशुतोष कोइरी, सहोदर खंडित, जगन्नाथ सिंह मुण्डा, निरंजन सिंह, रामजीवन सिंह मुण्डा, मनोहर लाल मुण्डा, दीनबंधु महतो, अनन्त महतो, बंशीधर महतो, डॉ. पराग किशोर सिंह, डॉ. नरेन्द्र कुमार दास, एन्थोनी मुण्डा आदि।

संदर्भ ग्रंथें – 1 प्राचीन कवि आर उनखर रचना, डॉ. पराग किशोर सिंह

2 रामकृष्टो केर गीत, संकलन श्री दीनबंधु महतो

3 आदि झूमर संगीत, राजा बहादुर उपेन्द्र नाथ सिंह देव

4 आधुनिक पंचपरगनिया साहितकार आर कलाकार, डॉ. पराग किशोर सिंह

5 काँची नदी, पंचपरगनिया कविता झोंपा, डॉ. नरेन्द्र कुमार दास

II. MEJOR COURSE - MJ- 5:

पंचपरगनिया भाषा का गद्य साहित्य (कहानी एवं नाटक)

सामान्य परिचय, प्रमुख कहानीकार एवं नाटककार

पाठ्यक्रम के इस अंश का अधिगम परिणाम निम्नवत् होगाः–

1. कहानी और नाटक गद्य साहित्य के प्रमुख अंग हैं। विद्यार्थी पंचपरगनिया साहित्य के कहानियों एवं नाटकों के परिचय प्राप्त कर सकेंगे।
2. कहानी और नाटक गद्य साहित्य के सर्वाधिक लोकप्रिय विधाएं हैं। इसके माध्यम से विद्यार्थी कहानी, नाटक एवं गद्य साहित्य के अन्य विधाओं के संदर्भ में जान सकेंगे।

प्रस्तावित संरचना

सामान्य परिचय, प्रमुख कहानीकार एवं नाटककार

इकाई–I– कहानी –

(क) उद्भव
(ख) विकास
(ग) परिभाषा
(घ) तत्व
(ङ) विशेषताएँ

इकाई–II– नाटक–
(क) उद्भव
(ख) विकास
(ग) परिभाषा
(घ) तत्व
(ङ) विशेषताएँ

इकाई–III – अन्य विधाएँ–
(क) संस्मरण
(ख) रिपोतार्ज
(ग) डायरी
(घ) जीवनी
(ङ) यात्रा वृतांत आदि।

संदर्भ ग्रंथें – 1 पंचपरगनिया भाषा और साहित्य का इतिहास, डॉ. करमचन्द्र अहीर,

2 हिन्दी साहित्य का इतिहास, डॉ. नगेन्द्र

I. MEJOR COURSE - MJ- 6:

पंचपरगनिया भाषा के निबंध एवं उपन्यास

पाठ्यक्रम के इस अंश का अधिगम परिणाम निम्नवत् होगाः–

1. विद्यार्थी पंचपरगनिया भाषा के गद्य विधा की व्यापक जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।
2. पंचपरगनिया निबंध एवं उपन्यास पंचपरगनिया समाज का प्रतिबिम्ब है। इसकी जानकारी विद्यार्थी इस पत्र के माध्यम से प्राप्त कर सकेंगे।

प्रस्तावित संरचना

इकाई–I– निबंध – उद्भव, विकास, परिभाषा, प्रकार

(क) भाषा सम्बन्धी निबंध

(ख) साहित्य सम्बन्धी निबंध

(ग)संस्कृति सम्बन्धी निबंध (पर्व–त्योहार एवं संस्कृति से सम्बन्धित)

इकाई–II– उपन्यास–

(क) पंचपरगनिया भाषा का उपन्यास का उद्भव

(ख) पंचपरगनिया भाषा का उपन्यास का विकास

(ग) पंचपरगनिया भाषा का उपन्यास का परिभाषा

(घ) पंचपरगनिया भाषा का उपन्यास का तत्व

(ङ) पंचपरगनिया भाषा का उपन्यास का विशेषताएँ।

संदर्भ ग्रंथें – 1 पंचपरगनिया साहित्यिक एवं सांस्कृतिक निबंध, दीनबंधु महतो एवं पुष्पा कुमारी

2 पंचपरगनिया निबंध संग्रह, करमचन्द्र अहीर एवं कैलाश सेठ

3 कारागार, गोरेन्द्र नाथ गौंझू

4 माँ माटी मानुष, राजकिशोर सिंह

5 नुपूर – ज्योतिलाल महादानी, अनुवादक – डॉ. अम्बिका स्वाँसी

II MEJOR COURSE - MJ- 7:

पंचपरगनिया काव्य के विविध रूप

पाठ्यक्रम के इस अंश का अधिगम परिणाम निम्नवत् होगाः–

1. पंचपरगनिया का पद्य साहित्य अत्यन्त समृद्ध है। इसके अध्ययन से भाषा की काव्य संरचना, रस, छंद, अलंकार आदि के संदर्भ में ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।
2. पंचपरगनिया भाषा के महाकाव्य, खण्ड काव्य व गीतिकाव्य के विशेषताओं से परिचित हो सकेंगे।
3. इसके अध्ययन से पंचपरगनिया भाषा में उत्कृष्ट पद्य साहित्य सृजन की प्रेरणा मिलेगी।

प्रस्तावित संरचना

इकाई I – पंचपरगनिया भाषा का महाकाव्य, खण्ड काव्य, गीतिकाव्य

(क) परिभाषा

(ख) विषेशताएँ

इकाई II – रस, छन्द, अलंकार
(अनुप्रास, उपमा, उत्प्रेक्षा, रूपक, यमक, श्लेष, वक्रोक्ति, अतिश्योक्ति अलंकार)

इकाई–III– शब्द शक्ति–अभिधा, लक्षणा, व्यंजना।

काव्य के गुण – प्रसाद, माधुर्य, ओज गुण आदि।

काव्य के दोष– शब्द, वाक्य, रस एवं अर्थ दोष।

संदर्भ ग्रंथें – 1 शिबु बारात, श्री राजकिशोर सिंह 'बुंडूआर'

2 रावण बध, डॉ. चन्द्र मोहन महतो

3 पंचपरगनिया लोकगीतों में सौंदर्य बोध, डॉ दिनेश प्रसाद सिंह

4 काव्य के तत्व, देवेन्द्र नाथ शर्मा

I. MEJOR COURSE - MJ- 8:

पंचपरगनिया भाषा का भाषा विज्ञान

पाठ्यक्रम के इस अंश का अधिगम परिणाम निम्नवत् होगाः–

1. भाषा की गहरी जानकारी हेतु भाषा विज्ञान का अध्ययन आवश्यक है। साहित्य में प्रयुक्त भाषा का निर्माण एवं संरक्षण का सम्पूर्ण ज्ञान भाषा विज्ञान से प्राप्त कर सकेंगे।
2. इसके द्वारा ही ध्वनि, शब्द आदि का सम्पूर्ण ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।
3. भाषा विज्ञान किसी भी भाषा का आधार तत्व होता है। इसके अध्ययन से अपनी भाषा की संरचना और उसके विशेषताओं को जान सकेंगे।

प्रस्तावित संरचना

इकाई–I – (क) पंचपरगनिया भाषा का परिचय
(ख) परिभाषा
(ग) उत्पत्ति
(घ) विशेषता
(ङ) भाषा परिवर्तन के कारण
(च) बोली और भाषा में अन्तर।

इकाई–II (क) ध्वनि विज्ञान
(ख) पद विज्ञान
(ग) वाक्य विज्ञान
(घ) अर्थ विज्ञान

इकाई–III–अनुवाद विज्ञान

(क) परिभाषा
(ख) प्रकार
(ग) उपयोगिता
(घ) कठिनाइयाँ

संदर्भ ग्रंथें – 1 पंचपरगनिया भाषा, परमानन्द महतो

2 भाषा विज्ञान, डॉ. भोलानाथ तिवारी

3 अनुवाद विज्ञान, डॉ. भोलानाथ तिवारी

II. MEJOR COURSE - MJ- 9:

झारखण्ड के स्वतंत्रता सेनानी एवं शहीद

पाठ्यक्रम के इस अंश का अधिगम परिणाम निम्नवत् होगाः–

1. विद्यार्थी झारखण्ड के अमर स्वतंत्रता सेनानी एवं शहीदों के जीवनी से परिचित हो सकेंगे।
2. भारत की आजादी के महानायकों में अपने शूरवीर पूर्वजों के योगदान का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।
3. विद्यार्थियों में पूर्वजों का गौरव, त्याग, तपस्या, देशप्रेम आदि की भावना जागृत होंगे।

प्रस्तावित संरचना

इकाई–I– सिद्धो–कान्हू, तिलका मांझी, ठाकुर विश्वनाथ साहदेव, पाण्डेय गणपत राय, शेखभिखारी, बिरसा मुण्डा, बुधु भगत, जतरा टाना भगत, तेलंगा खड़िया, नीलाम्बर–पिताम्बर, सिनगी दई महुआ गागराई, नारा हो आदि।

इकाई–II– अल्बर्ट एक्का, बिनोद बिहारी महतो, निर्मल महतो आदि।

संदर्भ ग्रंथें – 1 झारखण्ड एक विस्तृत अध्ययन, श्याम कुमार

2 झारखण्ड इतिहास एवं संस्कृति, डॉ. बी. वीरोत्तम,

3 झारखण्ड सामान्य ज्ञान, डॉ. मनीष रंजन,

4 झारखण्ड की रूपरेखा, डॉ. रामकुमार तिवारी,

I. ADVANCE MEJOR COURSE - AMJ- 1
झारखण्डी कानून एवं पारम्परिक शासन व्यवस्था

पाठ्यक्रम के इस अंष का अधिगम परिणाम निम्नवत् होगाः–

1. विद्यार्थी झारखण्डी कानून व पारम्परिक शासन व्यवस्था का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।
2. विद्यार्थी भूमि से सम्बन्धित कानूनों से परिचित होंगे।
3. विद्यार्थी हक और अधिकार के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।
4. विद्यार्थी पेसा एवं विल्किन्सन रूल से परिचित होंगे।

प्रस्तावित संरचना

इकाई- i - छोटानागपुर काश्तकारी अधिनियम (सी.एन.टी. एक्ट 1908) एवं संतालपरगना काश्तकारी अधिनियम (एस.पी.टी. एक्ट)

इकाई- ii - पेसा (PESA) कानून 'द प्रोविजनल ऑफ पंचायत एक्टेंशनटू द शिड्यूल्ड एरिया-1996 एवं विल्किन्सन रूल ।

इकाई- iii - मुण्डा-मानकी, पड़हा-पंचायत, माझी-परगनैत, डोकलो-सोहोर, ग्राम-सभा, पंचायत, दिउरि, पाहन, महतो, दिवान, कोटवार ।

अनुशंसित पुस्तकें :-

1. छोटानागपुर काश्तकारी अधिनियम (सी.एन.टी. एक्ट,1908)- डी. पी. नरूला
2. संताल परगना काश्तकारी अधिनियम (एस.पी.टी. एक्ट) - क्राउन पब्लिकेशन
3. झारखण्डी पंचायती राज अधिनियम 2001 - रश्मि कात्यायन
4. आदिवासियों की पारम्परिक शासन व्यवस्था एवं पंचायती राजः संदर्भ झारखण्ड - सं.सुधीर पाल
5. छोटानागपुर काश्तकारी अधिनियम (सीएनटी एक्ट, 1908) सामान्य परिचय और जानकारी - चन्द्रभूषण देवगम
6. ग्राम पंचायत व्यवस्था : कितनी अच्छी, कितनी बुरी - पी. एन. एस. सुरीन
7. आदिवासी अधिकार - सं. रमेश जेराई
8. मैन्यूअल ऑफ झारखण्ड लैंड्स - रश्मि कात्यायन
9. छोटानागपुर भूमि विधियाँ - एस. एन. श्रीवास्तव

II. ADVANCE MEJOR COURSE - AMJ- 2:

लेखन एवं प्रारूपण विधि, वाक्यांश, शब्द एवं वाक्यों का अनुवाद

पाठ्यक्रम के इस अंश का अधिगम परिणाम निम्नवत होगाः–

1. विद्यार्थी लेखन प्रक्रिया को सीख सकेंगे।
2. किसी भी भाषा को पंचपरगनिया में अनुवाद करने की कला सीख पायेंगे।
3. सभी प्रकार के कार्यालयी पत्र एवं संपादकीय पत्र लेखन को सीख पायेंगे ।

प्रस्तावित संरचना

इकाई- i - पत्र लेखन, कार्यालयी पत्र-व्यवहार, संपादकीय पत्र लेखन, आवेदन लेखन।

इकाई- ii - हिन्दी या अंग्रेजी से पंचपरगनिया भाषा में किसी गद्यांश अथवा पद्यांश का अनुवाद।

इकाई- iii - पंचपरगनिया भाषा से हिन्दी या अंग्रेजी में किसी गद्यांश अथवा पद्यांश का अनुवाद।

अनुशंसित पुस्तकें :-

1. आधुनिक हिन्दी व्याकरण और रचना - डॉ. वासुदेव नन्दन प्रसाद
2. वृहत व्याकरण भास्कर - डॉ. वचन देव कुमार
3. रचनात्मक लेखन - डॉ. रमेश गौतम

III. ADVANCE MEJOR COURSE - AMJ- 2:

लेखन एवं प्रारूपण विधि, वाक्यांश, शब्द एवं वाक्यों का अनुवाद

पाठ्यक्रम के इस अंश का अधिगम परिणाम निम्नवत होगाः–

4. विद्यार्थी लेखन प्रक्रिया को सीख सकेंगे।
5. किसी भी भाषा को पंचपरगनिया में अनुवाद करने की कला सीख पायेंगे।
6. सभी प्रकार के कार्यालयी पत्र एवं संपादकीय पत्र लेखन को सीख पायेंगे ।

प्रस्तावित संरचना

इकाई- i - पत्र लेखन, कार्यालयी पत्र-व्यवहार, संपादकीय पत्र लेखन, आवेदन लेखन।

इकाई- ii - हिन्दी या अंग्रेजी से पंचपरगनिया भाषा में किसी गद्यांश अथवा पद्यांश का अनुवाद।

इकाई- iii - पंचपरगनिया भाषा से हिन्दी या अंग्रेजी में किसी गद्यांश अथवा पद्यांश का अनुवाद।

अनुशंसित पुस्तकें :-

1. आधुनिक हिन्दी व्याकरण और रचना - डॉ. वासुदेव नन्दन प्रसाद
2. वृहत व्याकरण भास्कर - डॉ. वचन देव कुमार
3. रचनात्मक लेखन - डॉ. रमेश गौतम

II. ADVANCE MEJOR- AMJ- 4:
पंचपरगनिया भाषा के पत्र–पत्रिकाएँ

पाठ्यक्रम के इस अंश का अधिगम परिणाम निम्नवत् होगाः–

1. विद्यार्थियों में अच्छे लेखक बनने की अभिरूचि पैदा होगी।
2. विचारों का संवहन, प्रचार-प्रसार, संचार माध्यमों के विभिन्न रूपों के द्वारा होता है। पंचपरगनिया भाषा के प्रचार-प्रसार में इनकी भूमिका को विद्यार्थी जान सकेंगे व इसके महत्व को समझेंगे।
3. पंचपरगनिया में प्रकाशित पत्र-पत्रिकाओं से परिचित हो सकेंगे।
4. पंचपरगनिया पत्र-पत्रिकाओं की क्रमिक विकास एवं वर्तमान स्थिति से अवगत होंगे।
5. पत्र-पत्रिकाओं में उल्लेखित प्रमुख तथ्यों की जानकारी हासिल प्राप्त कर सकेंगे ।

प्रस्तावित संरचना

इकाई–I– पंचपरगनिया भाषा के पत्र–पत्रिकाओं का इतिहास

(क) दैनिक
(ख) सप्ताहिक
(ग) पाक्षिक
(घ) मासिक
(ङ) वार्षिक

इकाई–II– पंचपरगनिया भाषा के पत्र–पत्रिकाओं का क्रमिक विकास

इकाई–III– पंचपरगनिया भाषा के पत्र–पत्रिकाओं कावर्तमान स्थिति एवं कारण

संदर्भ ग्रंथें – 1 पंचपरगनिया के समस्त पत्र एवं पत्रिकाएँ

2 पंचपरगनिया के स्तम्भ प्रकाशित प्रकाशित करने वाले पत्र पत्रिकाएँ

3 राँची से प्रकाशित होने वाले अखबार

I. INTRODUCTORY REGULAR COURSE (IRC)

पंचपरगनिया भाषा एवं साहित्य का सामान्य परिचय

पाठ्यक्रम के इस अंश का अधिगम परिणाम निम्नवत् होगाः–

1. वर्त्तमान समय में जब विश्व एक परिवार के समान एकजुट हो चुका है। ऐसे में पंचपरगनिया भाषा के बारे में बतलाना विद्यार्थियों को जरूरी है।
2. पंचपरगनिया झारखण्ड की द्वितीय राजभाषा है। अतित में छोटानागपुर की राजभाषा लगभग 2000 वर्षों तक रह चुकी है। अतः इस पत्र के माध्यम से छात्रों को जानकारी प्राप्त हो सकेगी।
3. विद्यार्थी पंचपरगनिया भाषा की ऐतिहासिकता, उद्‌भव, विकास, भौगोलिक विस्तार, जनसंख्या एवं साहित्य का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।

प्रस्तावित संरचना

इकाई–I– पंचपरगनिया भाषा का ऐतिहासिकता
(क) उदभव, (ख) विकास, (ग) क्षेत्रीय भिन्नताएं

इकाई–II– सम्पर्क भाषा के रूप में पंचपरगनिया
(क) सदानों की भाषा
(ख) जनजातियों की सम्पर्क एवं मातृ भाषा

इकाई–III– पंचपरगनिया भाषा का भौगोलिक विस्तार एवं जनसंख्या
पार्श्व प्रदेश – असम, बंगाल, उड़िसा, छत्तीसगढ़,बिहार एवं अण्डमान निकोबार द्वीप समूह आदि।

इकाई–IV– पंचपरगनिया भाषा का लोक साहित्य एवं शिष्टसाहित्य
(क) लोकसाहित्य– लोकगीत, लोककथा एवं प्रकीर्ण साहित्य
(ख) शिष्ट साहित्य
i) पद्य साहित्य –गीत एवं कविताएं
ii) गद्य साहित्य – कहानी, निबंध, संस्मरण, जीवनी आदि।

संदर्भ ग्रंथें – 1 पंचपरगनिया भाषा, परमानन्द महतो
2 पंचपरगनिया लोकगीतों में जनजीवन, डॉ. अम्बिका स्वाँसी,
3 पंचपरगनिया लोक साहित्य और संस्कृति, परमानंद महतो एवं दीनबंधु महतो
4 पंचपरगनिया साहित्यिक एवं सांस्कृतिक निबंध, दीनबंधु महतो एवं पुष्पा कुमारी
5 पंचपरगनिया निबंध संग्रह, करमचन्द्र अहीर एवं कैलाश सेठ
6 चिती साँप, संतोष कुमार साहू 'प्रीतम–
7 पंचपरगनिया कहनी, डॉ. करमचन्द्र अहीर
8 पंचपरगनिया परकिरन' लोक साहित, दीनबन्धु महतो

I. MINOR ELECTIVE (MN 1)

कला, साहित्य एवं संस्कृति

पाठ्यक्रम के इस अंश का अधिगम परिणाम निम्नवत होगाः–

1. विद्यार्थी कला एवं साहित्य के संबंध में जान सकेंगे।
2. विद्यार्थी कला एवं समाज के बीच परस्पारिक संबंध के बारे में समझ सकेंगे।
3. विद्यार्थी झारखण्ड के सभी कला एवं संस्कृति को जान पायेंगे।

प्रस्तावित संरचना

इकाई - i - कला का सामान्य परिचय, वर्गीकरण, कलाओं का महत्व, झारखण्ड की पारम्परिक प्रमुख कलाएँ - मिट्टी कला, चित्र कला, काष्ठ कला, बाँस कला हस्तकला(सिलाई-कढ़ाई-बुनाई)।

इकाई - ii - कला, साहित्य एवं समाज का अन्तः सम्बन्ध।

इकाई - iii - कला एवं संस्कृति का अन्तः सम्बन्ध।

अनुशंसित पुस्तकें :-

1. झारखण्ड की पारम्परिक कलाएँ	: डॉ. गिरिधारी राम गौंझू 'गिरिराज'
2. कला	: हंस कुमार तिवारी
3. साहित्यलोचन	: डॉ. श्याम सुन्दर दास
4. कला विवेचन	: डॉ. विमल कुमार
5. तुलिका (झारखण्ड की जनजातीय चित्रकला)	: डॉ. आदित्य प्रसाद सिन्हा
6. थाती	: कला संस्कृति विभाग, झारखण्ड सरकार
7. सौंदर्य शास्त्र	: कुमार विमल
8. कला कोश	: अमरनाथ कपूर

I. MINOR ELECTIVE (MN 2) :

पारम्परिक वाद्य यंत्र, गीत एवं नृत्य शैलियाँ

पाठ्यक्रम के इस अंश का अधिगम परिणाम निम्नवत् होगाः–

1. झारखण्डी पारम्परिक वाद्य-यंत्रों की बनावट, प्रकृति आदि से परिचित हो सकेंगे।
2. पंचपरगनिया राग-रागिनी के समग्र रूपों का ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।
3. पंचपरगनिया नृत्य शैली की परिभाषा, प्रकार, विशेषता व महत्व से अवगत हो सकेंगे।
4. झारखण्डी पारम्परिक आभूषणों के बारे में जान सकेंगे।

प्रस्तावित संरचना

इकाई–I– राग–रागिनी

(क) डमकच, (ख) भादरिया, (ग) उदासी, (घ) फगुवा,(ङ) अधरतिया,

(च) भिनसरिया, (छ) झूमर (ज) पावस, (झ) झिंगाफूलिया, (ञ) बाउल आदि।

इकाई–II– (क) नृत्यकी परिभाषा

(ख) नृत्यकी प्रकार

(ग) नृत्यकीमहत्व

(घ) नृत्यकी विशेषताएं

इकाई–III– पारम्परिक आभूषण

इकाई–IV– वाद्य यंत्र एवं प्रकार

(क) बनावट

(ख) प्रकृति

(ग) आकार–प्रकार (मांदर, नगाड़ा, ढोल, ढाक, कारहा, बांसुरी, बनम, घंटा, भेंर, नरसिंधा, झांझ, ठेचका, टुहिला, केंदरा, आनंदलहरी, एकतारा आदि।

संदर्भ ग्रंथें – 1 झारखण्ड का लोकसंगीत, डॉ. गिरीधारी राम गौंझू

2 झारखण्ड का वाद्यंत्र, डॉ. गिरीधारी राम गौंझू

3 पांचपरगनाक पारम्परिक बाज बाजना, डॉ. सविता कुमारी मुण्डा

. MINOR ELECTIVE (MN 3) :

झारखण्डी समुदाय का सांस्कृतिक केन्द्र एवं झारखण्डी पाक् कला

पाठ्यक्रम के इस अंश का अधिगम परिणाम निम्नवत होगा :–

1. विद्यार्थी जनजातियों के युवागृह से परिचित होंगे ।
2. जनजातियों की सामाजिक व्यवस्था में युवागृह के महत्व से भी परिचित होंगे।
3. विद्यार्थी सामाजिक सांस्कृतिक केन्द्र एवं झारखण्डी पाक कला के बारे में परिचित होंगे।
4. विद्यार्थी सभी प्रकार के जनजातीय पाकवानों से परिचित होंगे।
5. विद्यार्थी सभी प्रकार के जनजातीय युवागृहों से परिचित होंगे।
6. विद्यार्थी रोग निरोधक पाकवानों से परिचत होंगे।

प्रस्तावित संरचना

इकाई – i – धुमकुड़िया, गिता चाड़ी, गितिः ओडाः, गितिः ओअ, गिपितिच् टाँडी, माँझी अखड़ा।

इकाई – ii – अखड़ा – परिभाषा, सामाजिक महत्व एवं विशेषता।

इकाई – iii – गुड़ पीठा, मडुआ पीठा, खुदी पीठा, पातपोड़ा पीठा, सिंबी-लउवा पीठा, मकई-सरई-महुआ लाठो, धुसका, खपरा पीठा, छिलका पीठा, धुधुरु पीठा, डुम्बु, मीट-मछली पकाने की कला, आदि ।

अनुशंसित पुस्तकें :-

1. झारखण्ड की पारम्परिक कलाएँ – डॉ. गिरिधारी राम गौंझू 'गिरिराज'
2. झारखण्ड की सांस्कृतिक विरासत – डॉ. गिरिधारी राम गाँझू 'गिरिराज'
3. खड़िया जीवन और परम्पराएँ – जोवाकिम डुंगडुंग एस. जे.
4. झारखण्ड के सदानों का इतिहास – डॉ. वीरेन्द्र कुमार साहु
5. भारतीय जनजातीय संस्कृति – गया पाण्डेय
6. सामाजिक सांस्कृतिक मानवशास्त्र – विजय शंकर उपाध्याय, गया पाण्डेय
7. खड़िया, मुण्डा और उराँव संस्कृति का तुलनात्मक अध्ययन – जोवाकिम डुंगडुंग एस. जे.

MIL – पंचपरगनिया व्याकरण एवं संप्रेषण (संचार)

1. निर्धारित पाठ्य पुस्तकों का पद्य भाग पाठ्य होगा।
2. व्याकरण अध्येय होगा।
3. निबंध - ऋतु पर्व, राष्ट्रीय समस्याएँ, भाषा, साहित्य, संस्कृति, प्रकृति, यात्रा वर्णन आदि।

अनुशंसित पुस्तकें :-

1. पंचपरगनिया भाषा : परमानन्द महतो
2. आदर्श पंचपरगनिया व्याकरण : डॉ. करम चन्द्र अहीर
3. पंचपरगनिया साहित्यिक एवं सांस्कृतिक निबंध : डॉ. दीनबंधु महतो
4. पाँचपरगनाक साहित्यिक आर सांस्कृतिक चिन्हाप : डॉ. पराग किशोर सिंह